ISBN 978-81-969895-5-2

प्रथम संस्करण

सम्भल टेली एग्रीकल्चर बुलेटिन

संरक्षक

डा. कृष्ण कुमार सिंह
कुलपति
सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ

कार्यक्रम संयोजक

डा. प्रवीण कुमार सिंह
निदेशक प्रसार
सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ

संपादक

ज्योति स्वरुप
महावीर सिंह •अरविन्द कुमार •पंकज •देवेन्द्र पाल सिंह

मुख्यालय विशेषज्ञ टीम

डा. विवेक, अधिष्ठाता (कृषि)•डा. आर. एस. सेंगर (निदेशक प्रशिक्षण एवं सेवायोजन)
डा. कमल खिलाडी (विभागाध्यक्ष, पादप रोग विज्ञान) •डा. गजे सिंह (विभागाध्यक्ष, कीट विज्ञान)
डा. सत्य प्रकाश (विभागाध्यक्ष, सब्जी विज्ञान) •डा. अरविन्द कुमार (विभागाध्यक्ष, फल विज्ञान)
डा. सत्येन्द्र कुमार (संयुक्त निदेशक, प्रसार) •डा. के. जी. यादव (प्राध्यापक) •डा. मनोज कुमार (प्राध्यापक)
डा. पी. के. सिंह (प्राध्यापक) •डा. एस. के. त्रिपाठी (प्राध्यापक) •डा. हरिओम कटियार (सह प्राध्यापक)

ऑडियो वीडिओ व्यवस्था

डा. दीपक सिसोदिया •श्री मनोज सेंगर •श्री पी. के. सिंह

विशेष सहयोग

श्री पी. एन. पाल, के. वी. के. सम्भल

प्रकाशक

कृषि विज्ञान केंद्र, सम्भल

मुद्रक

कृषि विज्ञान केन्द्र, पत्था मिठंनपुर, रहोली, चंदौसी,
सम्भल द्वारा सतरंग प्रिंटर्स, चंदौसी से प्रकाशित

Copyright © 2024 by Krishi Vigyan Kendra, Sambhal

संक्षिप्त परिचय

दिनांक 15 अप्रैल, 2024 दिन सोमवार को पूर्वाहन 11.00 बजे से कृषि विज्ञान केन्द्र, सम्भल के तत्वावधान में प्रगतिशील कृषक श्री रूम सिंह, कुढ़ फतेहगढ़ के प्रक्षेत्र पर टेली एग्रीकल्चर कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमे सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ के माननीय कुलपति डा. के. के. सिंह, निदेशक प्रसार डा. पी. के. सिंह तथा विश्वविद्यालय के विभिन्न विषयों के विभागाध्यक्ष एवं विशेषज्ञों के साथ सम्भल जनपद के प्रगतिशील कृषकों ने वर्चुअल रूप से जुड़कर प्रतिभाग किया। कृषकों ने विशेषज्ञों के समक्ष अपनी अपनी समस्याओं को रखा जिसका निराकरण तत्काल रूप से तकनीकी सुझाव के रूप में विशेषज्ञों द्वारा दिया गया।

टेली एग्रीकल्चर कार्यक्रम के महत्वपूर्ण बिन्दु

माननीय कुलपति महोदय के द्वारा कृषको को नवोन्मेषी तकनीकों, नवीनतम उन्नतशील प्रजातियों का प्रयोग, स्मार्ट एग्रीकल्चर, क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर का कृषि में प्रयोग करके कृषि में आगे बढ़ने का सुझाव दिया गया।

- निदेशक प्रसार डा. पी. के. सिंह द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों को कृषकों के साथ निरंतर कृषि तकनीकी संवाद बनाये रखने का सुझाव दिया गया।
- कृषि विज्ञान केन्द्र, सम्भल के प्रभारी अधिकारी डा. महावीर सिंह, उद्यान वैज्ञानिक एवं टेली एग्रीकल्चर के नोडल अधिकारी श्री ज्योति स्वरुप, फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डा. अरविन्द कुमार, पशुधन उत्पादन प्रबंधन वैज्ञानिक डा. पंकज, प्रक्षेत्र प्रबंधक डा. देवेन्द्र पाल सिंह तथा स्टेनोग्राफर श्री प्रकाश नारायण पाल ने भी कृषकों के साथ टेली एग्रीकल्चर कार्यक्रम में प्रतिभाग किया।
- केन्द्र के उद्यान वैज्ञानिक श्री ज्योति स्वरुप ने श्री रूम सिंह के प्रक्षेत्र का लाइव अवलोकन कराया जिसमे स्ट्रॉबेरी, मिर्च, भिन्डी तथा ग्वार की फसलों को दिखाया गया।
- इस अवसर पर प्रगतिशील कृषक श्री अनिल दत्त दुबे, श्री पीयूष शर्मा, श्री बाबू खान, श्री रूम सिंह, श्री देवराज, श्री सोमपाल सिंह, श्रीमती अनुपमा सिंह के अतिरिक्त लगभग 50 से अधिक कृषकों ने प्रक्षेत्र पर सम्मिलित होकर विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों से ऑनलाइन संवाद किया।
- कार्यक्रम का आयोजन जूम मीटिंग एप के लिंक :

https://us06web.zoom.us/j/89113808108?pwd=EtNlYC0QKtJbgyL3Rw5Tpf9FOGtsH7.1

द्वारा आयोजित किया गया। लिंक को कृषकों के मोबाइल से सीधे जोड़कर संवाद स्थापित किया गया।

टेली एग्रीकल्चर कार्यक्रम अंतर्गत कृषक-वैज्ञानिक संवाद

श्री पीयूष शर्मा, निवासी नेहटा, सम्भल

प्रश्नः– मैं अमरुद का बाग़ लगाना चाहता हूँ, मुझे यह बताएं कि अमरुद में अगेती/मध्यम/पछेती उत्पादन के लिए कौन – कौन सी उन्नतशील प्रजातियाँ हैं, जिनका उत्पादन करके वर्ष भर बिक्री कर सकें और लाभ कमा सकें ?

विशेषज्ञों का उत्तरः– इलाहाबादी सफेदा, सरदार, सेबनुमा अमरूद, इलाहाबादी सुरखा, बेहट कोकोनट, चित्तीदार, रेड फ्लेस्ड, ढोलका, नासिक धारदार, ललित आदि उन्नतशील किस्में हैं जोकि वर्ष भर एक निश्चित समय अन्तराल पर फलत देती हैं।

प्रश्नः– मेरे पास नीबू का बाग है शुरुआत में तो ठीक उत्पादन हुआ और अब नीबू के पेंड़ो की टहनियां ऊपर से सूखने लगती हैं, पत्तियां भी मुड़कर पीली पड़ जाती हैं और इस तरह से धीरे–धीरे पूरा पेंड सूख जाता है, कृपया यह बताएं यह क्यों होता है और इसको रोकने का उपाय क्या है ?

विशेषज्ञों का उत्तरः– यह एक जीवाणु जनित रोग है जोकि वगीचों की साफ–सफाई तथा उचित पोषण प्रबंधन न करने से होता है, अतः प्रत्येक पेंड के चारो तरफ थाला बनाकर साफ–सफाई करें। रोगी, सूखी एवं उत्पादकता रहित टहनियों को काट दें तथा कटे हुए भाग पर कॉपर आक्सीक्लोराइड पेस्ट का लेप लगायें। पेंड का ऐसा स्थान जहाँ से गोंद निकल रहा हो वहां पर गोंद को साफ करके कॉपर आक्सीक्लोराइड पेस्ट का लेप लगा दें। खाद एवं उर्वरकों की निर्धारित मात्रा का प्रयोग समय–समय पर करते रहें।

श्री सोमपाल सिंह , निवासी अकरोली, सम्भल

प्रश्नः– मैं बासमती धान की पूसा बासबती 1509 प्रजाति का उपयोग करता हूँ परन्तु अभी कुछ सालों से इसका उत्पादन घटता जा रहा है, क्या इसी तरह की कोई अन्य प्रजातियाँ हैं जिनका उपयोग किया जा सकता हो ?

विशेषज्ञों का उत्तरः– इसके अतिरिक्त बासमती धान की पूसा बासमती –1121, पूसा बासमती –1718, पूसा बासमती –1692, पूसा सुगंध–05 आदि अच्छी प्रजातियाँ हैं जिनका उपयोग आप कर सकते हैं।

श्री देवराज, निवासी गुमथल, सम्भल

प्रश्नः– मै प्राकृतिक पद्धति से धान, गेहूं पैदा करता हूँ, इसमें खरपतवार नियंत्रण की बड़ी समस्या आती है, इसमें मल्चिंग संभव नहीं है, तो इसके लिए क्या करना चाहिए ?

विशेषज्ञों का उत्तरः– फसल अवशेषों को न जलाकर आगामी फसल की बुबाई हैप्पी सीडर/सुपर सीडर से करें जिससे इन मशीनों से फसल अवशेष कटने के पश्चात आच्छादित हो जाते हैं।

श्री अनिल दत्त दुबे, निवासी नबाबपुरा, सम्भल

प्रश्नः– मैंने अपने यहाँ खेत पर सहजन लगा रखा है, जिसकी फलियाँ अत्यंत ही सस्ते दामों में बिकती हैं, क्या इन फलियों का कोई और उत्पाद बनाया जा सकता है ?

विशेषज्ञों का उत्तरः– सहजन की खेती के लिए ऐसी प्रजाति का चयन करना चाहिए जिनकी फलियों में कडुआपन न हो। ऐसी फलियों को सुखाकर उसका पाउडर बनाकर, उसकी पैकिंग कराकर बिक्री की जा सकती है तथा फलियों को प्रसंस्करण के बाद नमक के घोल अथवा सिरका में संरक्षित रखा जा सकता है।

श्री रूम सिंह, निवासी कुढ़ फतेहगढ़, सम्भल

प्रश्नः– मैंने पहली बार स्ट्रॉबेरी लगायी है क्या कोई स्ट्रॉबेरी की ऐसी प्रजाति या तकनीक है कि इसकी खेती वर्ष भर की जा सकती हो ?

विशेषज्ञों का उत्तरः– वर्ष भर स्ट्रॉबेरी का उत्पादन लेने के लिए ग्रीन हाउस का उपयोग अनिवार्य हो जाता है, परन्तु शरद ऋतु में प्लास्टिक मल्च एवं टपक सिंचाई पद्धति के साथ अच्छी खेती करके अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

श्रीमती अनुपमा सिंह, निवासी बनियाठेर, सम्भल

प्रश्नः– मेरा स्वयं सहायता समूह है जिसके माध्यम से हम हल्दी किसानों से खरीदते हैं और उसका प्रसंस्करण करके बेंचते है, ऐसी हल्दी में पीलापन बहुत कम होता है क्या अधिक पीलेपन वाली हल्दी की कोई प्रजाति है जिसे हम किसानों से उगा कर प्राप्त कर सके ?

विशेषज्ञों का उत्तरः– हल्दी की कस्तूरी पास्पु, सोनिया, सुगना, अमलापुरम, कृष्णा, राजेन्द्र व मधुकर आदि अच्छी प्रजातियाँ हैं जिनमे अच्छी मात्रा में करक्यूमिन पाया जाता है जिससे हल्दी का रंग पर्याप्त पीला होता है, जिनका उपयोग कृषकों से हल्दी उत्पादन के लिए करा सकती हैं।

श्री बाबू खान, निवासी नगलापुर्वा, सम्भल

प्रश्नः– मै मिर्च की खेती करता हूँ, परन्तु बरसात के समय में उसमे पत्ती सिकुड़ने वाला रोग लगने लगता है इसकी रोकथाम के लिए क्या करना चाहिए ?

विशेषज्ञों का उत्तरः– इस रोग को पर्ण कुंचन कहते हैं यह एक विषाणु से होता है। रोग के कारण पौधें की पत्तियां छोटी होकर मुड जाती है तथा पौधा बौना हो जाता है यह रोग सफेद मक्खी कीट के कारण एक दूसरे पौधे पर फैलता है। इसकी रोकथाम के लिए बरसात के मौसम में डाईमेथोएट 30 ईसी की 2 मि.ली. मात्रा 1 ली.पानी में घोलकर अथवा अधिक प्रकोप की स्थिति में थायमेथाक्साम 25 डब्लू जी की 5 ग्राम मात्रा 15 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।

श्री संतोष कुमार, निवासी बेरनी, सम्भल

प्रश्नः– डा. साहब धान में अचानक से पौधे बढ़ते हैं, जिसे हमारे यहाँ बकानी रोग कहते हैं इसको रोंकने का क्या उपाय है ?

विशेषज्ञों का उत्तरः– बकानी रोग को झंडा रोग या पैर गलन रोग भी कहा जाता है, यह रोग बासमती धान की फसल में आम तौर पर लगता है। सबसे पहले रोगरहित और स्वस्थ बीज का चुनाव करें इसके अलावा खेत में नाइट्रोजन उर्वरक का प्रयोग मृदा परीक्षण के पश्चात करें और बीज को कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम प्रति किग्रा की दर से बीज शोधन करना चाहिए।

तकनीकी ज्ञान सम्पन्न किसान

सम्भल टेली एग्रीकल्चर एक दृष्टि में

टेली एग्रीकल्चर अंतर्गत कृषक प्रक्षेत्र

टेली एग्रीकल्चर अंतर्गत कृषक के प्रक्षेत्र पर ग्वार की फसल का लाइव अवलोकन

टेली एग्रीकल्चर अंतर्गत कृषक के प्रक्षेत्र पर मिर्च की फसल का लाइव अवलोकन

टेली एग्रीकल्चर अंतर्गत कृषक के प्रक्षेत्र पर स्ट्रॉबेरी की फसल का लाइव अवलोकन

टेली एग्रीकल्चर अंतर्गत श्री रूम सिंह का कृषक–वैज्ञानिक संवाद

टेली एग्रीकल्चर अंतर्गत श्री अनिल दुबे का कृषक–वैज्ञानिक संवाद

टेली एग्रीकल्चर अंतर्गत केन्द्र के प्रभारी अधिकारी का विश्वविद्यालय के अधिकारीयों से संवाद

टेली एग्रीकल्चर अंतर्गत श्री पीयूष शर्मा का कृषक–वैज्ञानिक संवाद

टेली एग्रीकल्चर अंतर्गत श्रीमती अनुपमा सिंह का कृषक–वैज्ञानिक संवाद

टेली एग्रीकल्चर अंतर्गत श्री बाबू खान का कृषक–वैज्ञानिक संवाद

टेली एग्रीकल्चर अंतर्गत श्री संतोष सिंह का कृषक–वैज्ञानिक संवाद

टेली एग्रीकल्चर अंतर्गत श्री सोमपल सिंह का कृषक–वैज्ञानिक संवाद